C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय : हिंदी 'ब'

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
7. पाँच अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

खण्ड - क

[अपठित अंश]

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: [10]

वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए। विशेष विचारों को विशेष शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, ताकि सामनेवाले व्यक्ति को उसका महत्त्व समझ में आ जाए। मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे। मनुष्य की अच्छाई-बुराई अथवा उसका आचरण उसकी वाणी से पहचाना जाता है। वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है।

मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

इस प्रकार मनुष्य के जीवन में सटीक वाणी ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। इसीलिए बोलते समय सोच-समझकर, विचार करके बोलना चाहिए।

1. ईश्वर ने मनुष्य को कौन-सी बड़ी देन दी है?

   उत्तर : वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है।

2. बोलते समय किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

   उत्तर : वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्त्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए।

3. मनुष्य के विचार अर्थ-पूर्ण कब होगे?

   उत्तर : मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे।

4. मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन क्या है?

   उत्तर : वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है। मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

5. विशेष विचारों को क्यों और किस प्रकार व्यक्त करना चाहिए?

उत्तर : विशेष विचारों को विशेष शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, ताकि सामनेवाले व्यक्ति को उसका महत्त्व समझ में आ जाए।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए?

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए 'वाणी का सदुपयोग' उचित शीर्षक है।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. शब्द किसे कहते है? शब्द पद के रूप में कब बदल जाता है? [1]

उत्तर : शब्द वर्णों या अक्षरों के सार्थक समूह को कहते हैं।

उदाहरण के लिए क, म तथा ल के मेल से 'कमल' बनता है जो एक खास के फूल का बोध कराता है। अतः 'कमल' एक शब्द है।

कमल की ही तरह 'लकम' भी इन्हीं तीन अक्षरों का समूह है किंतु यह किसी अर्थ का बोध नहीं कराता है। इसलिए यह शब्द नहीं है। इसका रूप भी बदल जाता है।

जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो उसे शब्द न कहकर पद कहा जाता है।

प्र. 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए। [3]

(क) सौमिता खाना खाई और चली गई। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य

(ख) जब आप द्वार पर बैठे तब उसकी प्रतीक्षा करें। (रचना के आधार पर वाक्य-भेद बताइए)

उत्तर : मिश्र वाक्य

(ग) श्रेयसी बीमार थी अत: स्कूल नहीं आई। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : श्रेयसी बीमार होने के कारण स्कूल नहीं आई।

प्र. 4. (क) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए। [2]

- अठन्नी
- राधा-कृष्ण

समस्त पद	विग्रह	समास
अठन्नी	आठ आनों का समूह	द्विगु समास
राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण	द्वंद्व समास

(ख) निम्नलिखित विग्रहों का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए।[2]

- बुरी आत्मा वाला; कोई दुष्ट
- नीली है जो गाय

विग्रह	समस्त पद	समास
बुरी आत्मा वाला; कोई दुष्ट	दुरात्मा	बहुव्रीहि समास
नीली है जो गाय	नीलगाय	कर्मधारय समास

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए: [4]

(क) मुझे बहुत आनंद आती है।

उत्तर : मुझे बहुत आनंद आता है।

(ख) वह धीमी स्वर में बोला।

उत्तर : वह धीमे स्वर में बोला।

(ग) उसकी अक्ल चक्कर खा गई।

उत्तर : उसकी अक्ल चकरा गई।

(घ) उस पर घड़ों पानी गिर गया।

उत्तर : उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

प्र. 6. उचित मुहावरों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। [4]

1. मनन ने दसवीं की परीक्षा की तैयारी <u>मन लगाकर</u> की थी।
2. परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए सभी छात्रों ने देवी सरस्वती माँ के आगे <u>मस्तक नवाया</u>।
3. परीक्षा का परिणाम सुनकर रोहन <u>को चक्कर आ</u> गया।
4. आजकल हर कोई <u>दो से चार बनाने की</u> फ़िराक में ही रहता है।

खण्ड - ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक]

प्र 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: [2+2+2=6]

1. कलकत्तावासी अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

   उत्तर : कलकत्तावासी अपने-अपने मकानों व सार्वजानिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर अपनी देशभक्ति का प्रमाण, राष्ट्रीय झंडे का सम्मान तथा देश की स्वंत्रतता की ओर संकेत देना चाह रहे थे।

2. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

उत्तर : छोटे भाई ने टाइम टेबिल बनाते यह सोचा कि वह मन लगाकर पढ़ाई करेगा और अपने बड़े भाई साहब को शिकायत का कोई मौका न देगा परन्तु उसके स्वच्छंद स्वभाव के कारण वह अपने ही टाईम टेबिल का पालन नहीं कर पाया क्योंकि पढ़ाई के समय उसे खेल के हरे-भरे मैदान, फुटबॉल, बॉलीबॉल और मित्रों की टोलियाँ अपनी ओर खींच लेते थे।

3. तताँरा-वामीरो कहाँ की कथा है?

उत्तर : तताँरा-वामीरो एक लोक कथा है। यह देश के उन द्वीपों की कथा है जो आज लिटिल अंदमान और कार-निकोबार नाम से जाने जाते हैं। निकोबारियों का मानना है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे।

4. सवार कौन था? उसने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किये? 'कारतूस' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : सवार जो कि स्वयं वज़ीर अली ही था। कर्नल के खेमे में वेश बदलकर कर्नल को अपनी बातों से प्रभावित कर कर्नल को स्वयं को ही पकड़वाने की सहायता देने का जाल बिछाकर बड़ी ही चतुराई से कारतूसों को प्राप्त करता है।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। [5]

1. लेखक रवीन्द्र केलकर के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक के अनुसार सत्य वर्तमान है। उसी में जीना चाहिए। हम अक्सर या तो गुजरे हुए दिनों की बातों में उलझे रहते हैं या भविष्य के सपने देखते हैं। इस तरह भूत या भविष्य काल में जीते हैं। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। हम जब भूतकाल के अपने सुखों एवं दुखों पर गौर करते हैं तो हमारे दुख बढ़ जाते हैं। भविष्य की कल्पनाएँ भी हमें दुखी करती हैं। क्योंकि हम उन्हें पूरा नहीं कर पाते। जो बीत गया वह सत्य नहीं हो सकता। जो अभी तक आया ही नहीं उस पर कैसे विश्वास किया जा सकता है। वर्तमान ही सत्य है जो कुछ हमारे सामने घटित हो रहा है। वर्तमान ही सत्य है उसी में जीना चाहिए।

2. पाठ के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि दूसरों के दुःख से दुखी होने वाले लोग अब कम मिलते हैं।

उत्तर : प्रस्तुत पाठ में शेख अयाज, नूह, सुलेमान, लेखक की माँ कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो इंसान ही नहीं पशु-पक्षियों के दुःख से भी दुखी हो जाते थे। परंतु आज लेखक देखते हैं कि इस प्रकार के लोग दुनिया में देखने के लिए बहुत ही कम मिलते हैं। पहले पशु-पक्षियों को घरों में स्थान मिलता था आज उनके घर आने के रास्तों को ही बंद कर दिया जाता है। आज इंसान इतना लोभी, स्वार्थी हो गया है कि वह दूसरों के हितों के बारे में तो सोचता ही नहीं है।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए। [2+2+2=6]

1. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : मीराबाई की भाषा शैली राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है। इसके साथ ही गुजराती शब्दों का भी प्रयोग है। इसमें सरल, सहज और

आम बोलचाल की भाषा है। पदावली कोमल, भावानुकूल व प्रवाहमयी है। मीराबाई के पदों में भक्तिरस है। इनके पदों में अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रुपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार का प्रयोग हुआ है। अपनी प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने अत्यंत भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है। इनके पदों में माधुर्य गुण प्रमुख है और शांत रस के दर्शन होते हैं।

2. कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

उत्तर : यह तोप हमारी विजय और आज़ादी के प्रतीक के रूप में एक महत्त्व की वस्तु बन गई है। भारत की स्वतंत्रता के प्रतीक चिह्न दो बड़े त्योहार 15 अगस्त और 26 जनवरी गणतंत्र दिवस है। इन दोनों अवसरों पर तोप को चमकाकर कंपनी बाग को सजाया जाता है। इससे शहीद वीरों की याद दिलाई जाती है ताकि लोगों के मन में राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा मिले।

3. 'कर चले हम फ़िदा' कविता में खून की रेखा खींचने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : 'कर चले हम फ़िदा' कविता में खून की रेखा खींचने का क्या तात्पर्य देश के सैनिकों के देश की रक्षा के पूर्णतया समर्पण से है। कवि सैनिकों से कहते है कि भारतभूमि सीता की तरह पवित्र है। अगर कोई शत्रु रुपी रावण उसकी तरफ़ बढ़ेगा तो अपने खून से लक्ष्मण (सैनिक) रेखा खींच कर उसे बचाएँगे। अतः देश की रक्षा का भार सैनिकों पर है।

4. उदार व्यक्तियों का गुणगान संसार किस तरह करता है?

उत्तर : जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में दूसरों की चिंता करता है उस महान व्यक्ति की कथा का गुणगान सरस्वती अर्थात् पुस्तकों में किया जाता है। पूरी सृष्टि ऐसे व्यक्तियों की आभारी रहती है। ऐसे व्यक्तियों को बातचीत में हमेशा जीवित व्यक्तियों की तरह की जाती है। इस प्रकार संसार उदार व्यक्तियों का गुणगान उन्हें संसार में सदा अमर बनाकर करता है।

प्र. 10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। [5]

1. कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

उत्तर : कवि ने तालाब की तुलना दर्पण से की है क्योंकि तालाब का जल अत्यंत स्वच्छ व निर्मल है। वह प्रतिबिंब दिखाने में सक्षम है। दोनों ही पारदर्शी, दोनों में ही व्यक्ति अपना प्रतिबिंब देख सकता है। तालाब के जल में पर्वत और उस पर लगे हुए फूलों का प्रतिबिंब स्वच्छ दिखाई दे रहा था। काव्य सौंदर्य को बढ़ाने के लिए, अपने भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए कवि ने ऐसा रूपक बाँधा है।

2. भरे-पूरे घर-परिवार में भी नायक-नायिका कैसे बात करते हैं? बिहारी के दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : बिहारी ने बताया है कि घर में सबकी उपस्थिति में नायक और नायिका इशारों में अपने मन की बात करते हैं। नायक ने सबकी उपस्थिति में नायिका को इशारा किया। नायिका ने इशारे से मना किया। नायिका के मना करने के तरीके पर नायक रीझ गया। इस रीझ पर नायिका खीज उठी। दोनों के नेत्र मिल जाने पर आँखों में प्रेम स्वीकृति का भाव आता है।

इस पर नायक प्रसन्न हो जाता है और नायिका की आँखों में लजा जाती है।

प्र. 11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [6]

1. टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।

   उत्तर : टोपी हिंदू धर्म का था और इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम। परंतु जब भी टोपी इफ़्फ़न के घर जाता दादी के पास ही बैठता। उनकी मीठी पूरबी बोली उसे बहुत अच्छी लगती थी। दादी पहले अम्मा का हाल चाल पूछतीं। दादी उसे रोज़ कुछ न कुछ खाने को देती परन्तु टोपी खाता नहीं था। अत: दोनों का रिश्ता जाति और धर्म से परे प्यार के धागे से बँधा था यहाँ पर लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि जब रिश्ते प्रेम से बँधे होते है तो तब धर्म, मजहब सभी बेमानी हो जाते हैं।

2. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि खाते-पीते घरों के लड़के की स्कूल जाया करते थे?

   उत्तर : उस समय पढ़ाई के संबंध में इतनी जागरूकता नहीं थी दूसरे आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण भी अभिभावक स्कूल का गणवेश, शुल्क,किताबों पर व्यय करना नहीं चाहते थे। सालभर में एक-दो रुपया भी माता-पिता बच्चों पर खर्च करना नहीं चाहते थे। एक रुपया भी तब बड़ी रकम होती थी एक रुपए में एक सेर घी आ जाता था और दो रुपयों में चालीस मन गेंहूँ आ जाता था इसलिए उस समय केवल खाते-पीते घरों के लड़के ही स्कूल जाया करते थे।

खण्ड - घ

[लेखन]

प्र. 12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। [6]

'जहाँ चाह वहाँ राह'

प्रत्येक व्यक्ति के मन में किसी न किसी लक्ष्य को पाने की कामना रहती है। कई बार हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने में असफल होते हैं और अक्सर इसका दोष हम दुर्भाग्य को देते है। हमारी असफलता के दोषी हम खुद है, हमें हार माने बिना दृढ़ इच्छा और योजना के साथ फिर लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए। असफलता सफलता की सीढ़ी है, हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए कि यह असंभव है।

नेपोलियन के अनुसार असंभव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है। मनुष्य को स्थिर इच्छाशक्ति को बनाए हुए, अंतिम साँस तक अपने लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए।

अँग्रेजी भाषा में भी कहा जाता है, Where there Is a will, there Is a way"

पाणिनी, संस्कृत भाषा के महान वैयाकरण जब बच्चे थे और उसकी प्रारंभिक शिक्षा के लिए उसकी माँ उन्हें शिक्षक के यहाँ ले गई, शिक्षक ने कहा उनकी हथेली में शिक्षा के लिए कोई रेखा नहीं है उन्होंने अपने हाथ में चाकू से रेखा खीची और उस शिक्षक के पास गए। यह देखकर शिक्षक ने कहाँ दृढ़ इच्छाशक्ति से कुछ भी प्राप्त करना असंभव नहीं है। इसीलिए कहते है - 'जहाँ चाह वहाँ राह'।

कामकाजी महिलाएँ अपेक्षाएँ और शोषण

हमारे भारतीय समाज में नारी को नारायणी कहा गया है। नारी को देवी का दर्जा दिया गया। कहा गया है जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही नारी को 'गृह देवी या 'गृह लक्ष्मी'

कहा जाता है। प्राचीन समय में नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। परंतु मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय हो गयी। उसका जीवन घर की चारदीवारी तक सीमित हो गया। नारी को परदे में रहने के लिए विवश किया गया।

आज वर्तमान युग में नारी पुरुष समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति पथ पर आगे बढ़ रही है।

नर और नारी एक सिक्के के दो पहलु की तरह है। स्त्री-पुरुष जीवन-रूपी रथ के दो पहिये हैं, इसलिए पुरुष के साथ साथ स्त्री का भी शिक्षित होना जरुरी है। यदि माता सुशिक्षित होगी तो उसकी संतान भी सुशील और शिक्षित होगी। शिक्षित गृहणी पति के कार्यों में हाथ बँटा सकती है, परिवार को सुचारु रूप से चला सकती है।

आज वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। परंतु स्त्री पुरुष एक समान के नारे लगाने के बावजूद समाज में नारी का शोषण हो रहा है। स्त्रियों को पुरुष से कम वेतन दिया जाता है। साथ ही पुरुष प्रधान में समाज में अपनी योग्यता के बावजूद आगे बढ़ने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

साथ ही घर की सभी जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है, बच्चों की देखभाल और सास-ससुर की सेवा अलग से करनी पड़ती है। इस के लिए पुरुषों को आगे बढ़कर उसकी मदद करनी चाहिए, उसकी कामयाबी के लिए उसे सराहना चाहिए।

नारी का योगदान समाज में सबसे ज्यादा होता है। बच्चों के लालन-पालन, शिक्षा से लेकर नौकरी तक नारी हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे है। अतः नारी को कभी कम नहीं आँकना चाहिए और उसका सदा सम्मान करना चाहिए। नारी त्याग और ममता की मूर्ति है उसे सम्मान और प्यार मिलेगा तो निश्चित वह हमें बेहतर भविष्य प्रदान करेंगी।

निरक्षरता एक अभिशाप

निरक्षरता मानव जीवन में एक अभिशाप है। निरक्षर नागरिक किसी भी देश के लिए अभिशाप होते हैं। अशिक्षित होना एक अभिशाप है, देश के मस्तक पर कलंक है।

निरक्षरता के कारण देशवासियों को घोर संकटों का सामना करना पड़ा है, चाहे वे सामाजिक हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो अथवा वैयक्तिक हो। शिक्षा के अभाव में न हम अपना व्यापार ही बढ़ा सके और न ही औद्योगिक क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति कर सके। जमींदारों, सूदखोरों ने निर्धन किसानों का शोषण उनकी निरक्षरता का लाभ उठाकर ही किया। पीढ़ियाँ बीत जाती थीं, किंतु कर्जे से मुक्ति नहीं मिलती थी विश्व में साक्षरता के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए ही संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने 17 नवंबर, 1965 को आठ सितंबर का दिन विश्व साक्षरता दिवस के लिए निर्धारित किया था। 1966 में पहला विश्व साक्षरता दिवस मनाया गया था और तब से हर साल इसे मनाए जाने की परंपरा जारी है. साक्षरता दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य आम जनता को साक्षर होने के लाभों से अवगत कराना है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारत के लिए निरक्षरता को एक अभिशाप माना और आजादी के 60 साल के बाद भी हम इस अभिशाप से मुक्ति पाने में पूरी तरह से असफल रहे हैं। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि साक्षरता का अर्थ केवल पढ़ने-लिखने और हिसाब-किताब करने की योग्यता प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि हमें नवसाक्षरों में नैतिक मूल्यों के प्रति आदरभाव रखने की भावना पैदा करना होगी।

आज विश्व आगे बढ़ता जा रहा है और अगर भारत को भी प्रगति की राह पर कदम से कदम मिलाकर चलना है तो साक्षरता दर में वृद्धि करनी ही होगी। शिक्षा देश के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक उत्थान के

लिए बहुत आवश्यक है। शिक्षा से ही मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होता है। मनुष्य शिक्षा के अभाव में दुर्बल, निसहाय, अंधविश्वासी आदि दुर्भावनाओं से ग्रसित हो जाता है।

निरक्षरता के अभिशाप को दूर करने के लिए कोई उम्र या समय की सीमा नहीं होती इसलिए हर व्यक्ति को अपने जीवन में अक्षर ज्ञान प्राप्त कर नया उजाला लाना चाहिए। हम अपने देश का कल्याण करना चाहते हैं, तो प्रत्येक देशवासी का शिक्षित होना आवश्यक है।

प्र. 13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80-100 शब्दों में पत्र लेखन कीजिए। [5]

1. आपके मोहल्ले में बिजली-आपूर्ति नियमित रुप से नहीं हो रही है बिजली-संस्थानक के अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए।

सेवा में,
मुख्य अधिकारी
बिजली संस्थान
दिल्ली।
दिनाँक: 5 मई, 20xx

विषय : बिजली-आपूर्ति नियमित करवाने हेतु आवेदन पत्र।
महोदय
सविनय निवेदन है कि मैं सीता नगर का निवासी हूँ। मेरी कॉलोनी में चार दिनों से बिजली की आपूर्ति ठीक से नहीं हो रही है। दिनभर में केवल एक-दो घंटे ही बिजली आती है। इस कारण हम नगरवासियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। गर्मियों के दिन होने के कारण सभी नगरवासी त्रस्त हो रहे हैं।

बिजली व्यवस्था एक आवश्यक सेवा है। आशा है कि आप इस समस्या पर गौर करेंगे और शीध्र ही आवश्यक कार्यवाही द्वारा कॉलोनी में नियमित, बिजली पूर्ति की व्यवस्था करवाओंगे।

धन्यवाद

भवदीय

प्रवीण पांडे

अथवा

2. आपके जन्म दिवस पर आपके चाचाजी द्वारा उपहार में भेजी गई पढ़ाई से संबंधित संदर्भ पुस्तकें प्राप्त करने पर उन्हें धन्यवाद देते हुए पत्र लिखिए।

नेहरू छात्रावास

दिल्ली पब्लिक स्कूल

नई दिल्ली

दिनाँक: 30 मार्च 20xx

आदरणीय चाचाजी

सादर चरण स्पर्श।

पत्र देर से लिखने के लिए क्षमा चाहता हूँ। आप तो जानते ही हो कि मेरी वार्षिक परीक्षा चल रही थी। जिसके कारण मैं आपको पत्र नहीं लिख पाया। यह पत्र मैंने आपको धन्यवाद देने के लिए लिखा है। चाचाजी आपने उपहारस्वरूप जो संदर्भ पुस्तकें भेजी थी उसके लिए अनेकों धन्यवाद। उन पुस्तकों के कारण मुझे अपनी वार्षिक परीक्षा में काफी मदद मिली। आपने अपने व्यस्तम जीवनशैली में भी मेरा जन्मदिन न केवल याद रखा बल्कि उपहार स्वरुप अमूल्य भेंट भेजीं। सच में चाचाजी बहुत-बहुत धन्यवाद।

चाचाजी को मेरा प्रणाम और नन्हीं स्नेह को ढेर सारा प्यार देना।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

आपका पुत्रवत

सौरभ

प्र. 14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 40 से 50 शब्दों में सूचना तैयार कीजिए। [5]

1. सोसायटी में गंदगी न करने से संबंधित सूचना तैयार करें।

सूचना

गौतम गोविंद

आनंद नगर

दिनाँक: 4 अप्रैल 20xx

सभी रहिवासियों को सूचित किया जाता है कि आए दिन सोसायटी परिसर में कूड़ा ही कूड़ा नजर आता है। इमारत की सीढ़ियों में भी रहिवासियों के जूते-चप्पल, गमले, कूड़ादान आदि सभी बाहर ही नजर आते हैं इस कारण सोसायटी के सौंदर्य पर बड़ा ही बुरा असर पड़ रहा है। अत: सभी को सूचित किया जाता है कि अपने घर के बाहर पड़ा सभी सामान जल्द-से-जल्द हटा लें। साथ ही अपने घरों की बालकनी से किसी भी प्रकार का कूड़ा और कचरा बाहर न फेंकें अन्यथा जुर्माने के रूप में हर बार 500 रुपए वसूले जाएँगे।

आदेशानुसार

चेयरमैन

बेनी माधव चंदेला

2. अंतर्रविद्यालयी चित्रकला प्रतियोगिता संबंधित सूचनापत्र लिखिए।

सूचना

विद्यार्थी समिति

विवेकानंद विद्यालय, दिल्ली

दिनाँक : 15 जून 20xx

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि अंतर्रविद्यालयी चित्रकला प्रतियोगिता विद्यालय के सभागार में आयोजित है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों के नाम आमंत्रित हैं।

दिनाँक - 25 जून 20xx

समय - प्रातः 11 बजे

स्थान - विद्यालय सभागार

विषय - चित्रकला प्रतियोगिता

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 21 जून 20xx तक अपने चित्रकला के अध्यापक को दें ।

राजीव शर्मा

चित्रकला अध्यापक

प्र. 15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 50-60 शब्दों में संवाद लिखें। [5]

1. महिला और सब्जीवाले के मध्य संवाद लिखें।

सब्जीवाला : क्या चाहिए मेडम?

महिला : प्याज।

सब्जीवाला : छोटे या बड़े

महिला : दोनों के क्या दाम है?

सब्जीवाला : छोटे 25 रु. और बड़े 20 रु. किलो

महिला : दो दिन पहले तो मैंने छोटे प्याज 20 रु. में खरीदे थे।

सब्जीवाला : आप सही कह रही है परंतु आज मार्केट में प्याज के दाम बढ़ गए है।

महिला : आप ठीक भाव लगा देना, मैं दूसरी सब्जी भी लेनेवाली हूँ।

सब्जीवाला : देखते है, और क्या दूँ?

महिला : आलू कैसे?

सब्जीवाला : 20 रु. किलो

महिला : 2 किलो देना

सब्जीवाला : ये लीजिए।

महिला : अब ठीक हिसाब कर दो।

सब्जीवाला : ठीक है मैडमजी।

2. दो सहेलियों के मध्य वार्तालाप पर संवाद लेखन लिखिए:

रिया : सुप्रभात! नीना।

नीना : सुप्रभात! रिया।

नीना : रिया विद्यालय में सर्वप्रथम आने के लिए तुम्हें अनेकों बधाईयाँ।

रिया : धन्यवाद रिया।

नीना : हमें भी अच्छे अंक लाने का उपाय बताओ।

रिया : नीना सर्वप्रथम आने के लिए कड़ी मेहनत, लगन और निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है,जिसने इस मंत्र को जान लिया वही सफल हो गया समझो।

नीना : ये बात तो तुमने सोलह आने सच कही।

रिया : अच्छा! नीना अब चलती हूँ।

नीना : अच्छा! रिया फिर मिलेंगें।

प्र. 16. निम्नलिखित विज्ञापनों में से किसी एक विज्ञापन का आलेख 50 शब्दों में तैयार कीजिए। [5]

1. घी के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए: [5]

सरस घी

रखिए अच्छी सेहत की नींव,

खाईए सरस घी

2. परफ्यूम के लिए विज्ञापन बनाइए।

तराना परफ्यूम

दिन भर महकते रहने का अरमान,

अब पूरा होगा तराना परफ्यूमस के साथ।